**BANC 102: सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का परिचय**

**अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य**

**(TMA)**

**कोर्स कोड: बीएएनसी 102**

**असाइनमेंट कोड: बीएएनसी 102/ASST/TMA/ जुलाई 2026 और जनवरी 2027**

**कुल अंक: 100**

**सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों में सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।**

## सत्रीय कार्य – I

**निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए।** **2x20= 40**

क. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान के विषयक्षेत्र तथा इसकी प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।

ख. क्षेत्रकार्य करने में सम्मिलित चरणों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

## सत्रीय कार्य – II

**निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। (लघु टिप्पणियाँ लिखें)** **2X10=20**

क. संस्कृति एवं व्यक्तित्व विचारधारा की चर्चा कीजिए।

ख. राजनीतिक संस्थाओं–बैंड, वंश–आधारित समाज तथा मुखियातंत्र (प्रमुखतंत्र) का सार प्रस्तुत कीजिए।

**निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 75 शब्दों में दीजिए।** **2x5=10**

क. संस्कृति

ख. मानवविज्ञान एवं समाजशास्त्र के मध्य संबंध

ग. व्याख्यात्मक उपागम

घ. जनजातियाँ

ई. रूथ बेनेडिक्ट

## सत्रीय कार्य – III

क. ऐसा एक विषय चिन्हित एवं चयनित कीजिए जो ग्राम जीवन से संबंधित हो। अपने अध्ययन के महत्त्व, अध्ययन की इकाई, विधियों, उपकरणों तथा प्रविधियों पर बल देते हुए एक सिनॉप्सिस तैयार करने के चरण लिखिए। **20**

ख. निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए। 2×5=10

संबंध स्थापना (रैपोर्ट बिल्डिंग)

सर्वेक्षण विधि

---

## क. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान के विषयक्षेत्र तथा इसकी प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।

**उत्तर**

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान मानव जीवन का ऐसा अध्ययन है जिसमें मनुष्य के सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, आस्थाओं, व्यवहारों और जीवन-पद्धतियों को उनके सांस्कृतिक संदर्भ में समझा जाता है। इसका केंद्रीय प्रश्न है कि अलग-अलग समाज अपने दैनिक जीवन को कैसे संगठित करते हैं और समान मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अलग-अलग तरीके क्यों अपनाते हैं। यह केवल दूर-दराज के जनजातीय समुदायों का अध्ययन नहीं है; आज गाँव, नगर, प्रवासी समुदाय, अस्पताल, विद्यालय और डिजिटल समाज भी इसके अध्ययन में आते हैं।

**विषयक्षेत्र का स्वरूप**

**सामाजिक संगठन तथा रिश्तेदारी :** परिवार, विवाह, नातेदारी, वंश, निवास के नियम और उत्तराधिकार का अध्ययन इस विषय का महत्त्वपूर्ण भाग है। उदाहरण के लिए, कुछ समुदाय संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देते हैं, जबकि दूसरे समुदायों में एकल परिवार अधिक प्रचलित होते हैं। मानवविज्ञानी यह समझता है कि इन व्यवस्थाओं का संबंध संपत्ति, श्रम, बच्चों की देखभाल और सामाजिक दायित्वों से कैसे बनता है।

**संस्कृति और दैनिक व्यवहार :** भाषा, भोजन, पहनावा, लोककथाएँ, रीति-रिवाज, त्योहार, मूल्य, प्रतीक और शिष्टाचार संस्कृति के अंग हैं। इनका अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि लोग सामाजिक व्यवहार सीखते कैसे हैं और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान कैसे पहुँचता है। संस्कृति परिवर्तनशील है; उसमें परंपरा और नए प्रयोग दोनों मौजूद रहते हैं।

**आर्थिक जीवन :** उत्पादन, श्रम-विभाजन, वस्तुओं का वितरण, बाजार, उपहार-विनिमय और आजीविका की पद्धतियाँ आर्थिक मानवविज्ञान के विषय हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण परिवारों में खेती के साथ पशुपालन, मजदूरी और छोटे व्यापार को जोड़कर आय अर्जित की जाती है। केवल रुपये में होने वाला लेन-देन नहीं, बल्कि पारस्परिक सहायता और सामाजिक प्रतिष्ठा भी आर्थिक संबंधों को प्रभावित करते हैं।